अनुसूचित जातियों पर अत्याचार की घटनाएं – एक नज़र में

1. दलित किशोरी की हत्या, शव को जलाने की कोशिश, हापुड़ (उ.प्र.) की घटना ।

2. मंदिर में प्रवेश से मना करने पर दलित परिवार ने दी धर्म परिवर्तन की धमकी, मेरठ (उ.प्र.) की घटना ।

3. दलित सोसायटी घोटाला मामले में बिजनेस जांच (जींद जिला हरियाणा) की घटना ।

4. सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक अहम फैसले में सरकारी बैंकों के स्केल एक से छह तक एससी/एसटी कर्मचारियों को प्रोन्नति में आरक्षण देने का आदेश दिया है । (दैनिक जागरण, नई दिल्ली, 12 जनवरी, 2015) ।

5. दलित किशोरी का अंतिम संस्कार नहीं करने दिया गया बाद में पुलिस की मौजूदगी में संस्कार कराया गया (उ.प्र.) की घटना, बागपत ।

6. जमीनी विवाद को लेकर दलितों पर हमला – 7 घायल, पलवल (हरियाणा) की घटना ।

7. दलित युवक के साथ मारपीट करने और जातिसूचक शब्द का प्रयोग करने के जुर्म में एक अदालत ने 5 लोगों को कैद और 3500-3500 रुपए जुर्माने की सजा सुनाई - जींद(हरियाणा)

8. पंचायत ने 41 हजार में किया दलित की इज्ज़त का सौदा – बिहार की घटना ।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की त्रैमासिक गृह पत्रिका (ई-मैगजीन) "अनुसूचित जाति वाणी" का बारहवां अंक प्रस्तुत करना मेरे लिए खुशी और गौरव का एक अवसर है । वस्तुतः इस पत्रिका के प्रकाशन के पीछे उद्देश्य यह है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था में निम्न जातियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक विकास की जागरुकता का प्रचार-प्रसार हो । आज, भारतीय समाज के कोने-कोने में भेदभाव, घृणा, छुआछूत जैसी कुप्रथाओं की दुनियादारी है । यह समाज निर्धारित मानवीय मूल्यों के खिलाफ आचरण पर आधारित है जिसका कुफल आज देश, समाज और दुनिया के हरएक क्षेत्र में दिखाई दे रहा है ।

जाति के आधार पर भेदभाव समाज में सबसे बड़ा भेदभाव है । निम्न जाति का होने के कारण योग्य आदमी को वंचित करके ऊंची जाति के लोगों को सुविधा देने का नाम ही जातीय भेदभाव है और अत्याचार भी है ।

भारतीय समाज में जाति प्रथा जैसी कुप्रथा का निवारण किया जाना संभव नहीं है भले ही इसके लिए सरकारी स्तर के तंत्र को कितना भी सशक्त बना लें । जब तक समाज के लोगों, विशेषकर अगड़ी जाति के लोगों की मानसिकता में बदलाव लाने के सरकारी और सामाजिक स्तर पर बेहतरी के उपाय न किए जाएं । साथ ही शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे सामाजिक कुरीतियों को दूर किया जा सके और मानवता के विकास तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन से जुड़ी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा लोगों को रोजी-रोटी के लिए दूसरों पर निर्भर न रहना पड़े ।

भारतीय समाज भेदभाव, अत्याचार, घृणा(छुआछूत), अमानवीय कृत्य (हाथ से मैला उठाना) आदि पर आधारित है । अनुसूचित जाति की महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं ।

यह एक दुखद पहलू है कि यदि कोई अनुसूचित जाति का व्यक्ति/परिवार भारतीय समाज में मुख्य स्थान बना लेता है अर्थात् वह मुख्य धारा में शामिल हो चुका होता है तो वह भी स्वयं को इन जातियों के विकास में कोई योगदान नहीं रह जाता है जबकि ऐसे व्यक्ति को अनुसूचित जाति की आवाज उठाने के लिए तत्पर रहना चाहिए ।

जातिवाद की छाप इसलिए नहीं मिट सकती क्योंकि जब एक लड़का यह देखता है कि उसके माता-पिता दूसरे लड़के के माता-पिता से घृणा करते हुए छुआछूत का व्यवहार करते हैं या इस प्रकार की बातें करते हैं तो यही बात उस लड़के के मन में बैठ जाती है और वह बड़ा होकर यही व्यवहार अन्य निम्न जाति के लोगों के साथ करने लगता है । यह पूरे समाज में व्याप्त है । इसके निवारण के लिए समाज में जागरुकता लानी चाहिए जिसमें शिक्षा का प्रसार आवश्यक है । शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि उसमें भेदभाव, घृणा, छुआछूत आदि जैसी कुप्रथाओं का उन्मूलन किया जा सके । यूरोपियन देशों में वर्ण आधारित छुआछूत व घृणा नहीं है । इसलिए वे मानवीय दृष्टिकोण में आगे हैं । हमें भी देश की प्रगति के लिए समाज के कोने-कोने में व्याप्त भेदभाव, घृणा आदि को सबसे पहले हटाना होगा तभी समाज उन्नति करेगा ।

क्या आप जानते हैं

- कोरिया 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाता है ।
- नेपाल कभी गुलाम नहीं रहा ।
- कुल देश 353 हैं ।
- ग्रेट ब्रिटेन के टिकट पर देश का नाम नहीं होता है ।
- सबसे बड़ी मस्जिद अलमलविदा (इराक) है ।
- सऊदी अरब में मन्दिर-मस्जिद नहीं हैं ।
- सबसे बड़ा सागर प्रशांत महासागर है ।
- सबसे बड़ा महाद्वीप - एशिया ।
- सबसे कठोर कानून – सऊदी अरब में ।
- सफेद हाथी – थाईलैंड ।
- सबसे अधिक वेतन - अमेरिका के राष्ट्रपति का ।
- स्वीटजरलैण्ड के राष्ट्रपति का कार्यकाल - एक वर्ष ।
- नील नदी – सबसे बड़ी नदी – 6648 किलोमीटर ।
- सबसे बड़ा रेगिस्तान – सहारा अफ्रीका (84 लाख वर्ग किलोमीटर) ।
- सबसे महंगी वस्तु – यूरिनियम ।
- सबसे प्राचीन भाषा – संस्कृत ।
- स्वीटजरलैण्ड युद्ध में भाग नहीं लेता ।
- आधे देश में दिन और आधे देश में शाम – रूस ।
- सबसे बड़ा एयरपोर्ट – फोर्थवर्थ टक्साल अमेरिका ।
- सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर - टोक्यो ।
- सबसे लम्बी नहर – स्वेज (168 किलोमीटर) ।
- सबसे बड़ा महाकाव्य – महाभारत ।

हंसी के फव्वारे

- एक बार रावण को कोर्ट में बुलाया गया । जज ने कहा कि गीता पर हाथ रखकर कसम खाओ कि मैं सच बोल रहा हूं ।
  रावण ने कहा कि मैं गीता पर हाथ नहीं रखूंगा क्योंकि मैंने एक बार सीता पर हाथ रखा था तो इतना बखेड़ा खड़ा हो गया था ।

- एक आदमी की पत्नी मर गई । उसे चिता पर लिटा दिया गया लेकिन वह जिंदा हो गई और उठ बैठी और कहने लगी कि मुझे क्यों जला रहे हो मैं तो जिंदा हूं ।
  उसके पति ने कहा - तू क्या डॉक्टर से ज्यादा जानती है ।

- एक आदमी अपनी पत्नी को डॉक्टर के पास ले गया । डॉक्टर ने कहा ये तो दो-चार दिन की मेहमान है ।
  आदमी ने कहा कोई बात नहीं । इतने दिन से झेल लिया तो दो-चार दिन की क्या बात है ।

भीमराव अम्बेडकर

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर एक विश्व स्तर के विधिवेता थे । वे एक बहुजन राजनैतिक नेता और एक बौद्ध उनरूपत्थानवादी होने के साथ-साथ भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार भी थे । वे बाबा साहेब के नाम से लोकप्रिय हैं । उन्होंने अपना सारा जीवन भारतीय समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था में कुप्रथाओं के विरुद्ध संघर्ष में बिता दिया और बौद्ध धर्म को ग्रहण करके इसके संतावादी विचारों से समाज में समानता स्थापित की । बाबा साहेब अम्बेडकर को भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया है जो भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है ।

डॉ. अम्बेडकर ने अछूत जाति व्यवस्था की कटु आलोचना की । उन्होंने मोहन दास गांधी पर ही अस्पृश्य समुदाय को एक करुणा की वस्तु के रूप में प्रस्तुत करने का आरोप लगाया । अम्बेडकर ने 8 अगस्त, 1930 को एक शोषित वर्ग के सम्मेलन में अपनी राजनीतिक दृष्टि को दुनिया के सामने रखा जिसके अनुसार शोषित वर्ग की सुरक्षा सरकार और कांग्रेस दोनों से स्वतंत्र होने में है ।

"हमें अपना रास्ता स्वयं बनाना होगा और स्वयं ... राजनैतिक शक्ति शोषितों की समस्याओं का निवारण नहीं हो सकती, उनका उद्धार समाज में उनका उचित स्थान पाने में निहित है । उनको अपना रहने का बुरा तरीका बदलना होगा ... । उनको शिक्षित होना चाहिए ... । एक बड़ी आवश्यकता उनकी हीनता की भावना को झकझोरने और उनके अंदर उस देवीय असंतोष की स्थापना करने की है जो सभी ऊंचाईयों का स्रोत है ।"

अम्बेडकर की प्रतिष्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेता की थी जिसके कारण जब 15 अगस्त, 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार अस्तित्व में आई तो उसने अम्बेडकर को देश का पहला कानून मंत्री बनाया । 29 अगस्त, 1947 को अम्बेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी । संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया ।

अम्बेडकर द्वारा तैयार किया गया संविधान पाठ में संवैधानिक गारंटी के साथ व्यक्तिगत नागरिकों को एक व्यापक श्रेणी की नागरिक स्वतंत्रताओं की सुरक्षा प्रदान की जिनमें धार्मिक स्वतंत्रता, अस्पृश्यता का अंत और सभी प्रकार के भेदभावों को गैर-कानूनी करार दिया गया । महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की वकालत की और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए सिविल सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों की नौकरियों में आरक्षण प्रणाली शुरु करने के लिए सभा का समर्थन भी हासिल किया । 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा ने संविधान को अपना लिया । अम्बेडकर ने कहा .. "मैं महसूस करता हूं कि संविधान, साध्य, लचीला है पर साथ ही यह इतना मजबूत भी है कि देश को शांति और युद्ध दोनों के समय जोड़कर रख सके । वास्तव में, मैं कह सकता हूं कि अगर कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नहीं होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य अधम था ।

अद्वितीय प्रतिभा के धनी डॉ. भीमराव अम्बेडकर

डॉ. भीमराव अम्बेडकर अनन्य कोटि के नेता थे जिन्होंने अपना समस्त जीवन समग्र भारत की कल्याण कामना में उत्सर्ग कर दिया । खासकर भारत के 80 फीसदी दलित, सामाजिक व आर्थिक तौर से अभिशप्त थे, उन्हें अभिशाप से मुक्ति दिलाना भी डॉ. अम्बेडकर का संकल्प था ।

14 अप्रैल, 1891 को महुमेय सुबेदार रामजी सतपाल एवं भीमभाई की 14वीं संतान के रूप में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म हुआ था । उनके व्यक्तित्व में स्मरण शक्ति की परखरता, बुद्धिमता, ईमानदारी, सच्चाई, नियमितता, दृढ़ता, संग्रामी स्वभाव का मेल था । बाबा साहेब ने कहा – वर्गहीन समाज गढ़ने से पहले समाज को जाति विहीन करना होगा । समाजवाद के बिना दलित-मेहनती इंसानों की आर्थिक मुक्ति संभव नहीं । बाबा साहेब ने संघर्ष का बिगुल बजाकर आह्वान किया "छीने हुए अधिकार भीख में नहीं मिलते, अधिकार वसूल करना होता है" ।

बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड ने भीमराव अम्बेडकर को मेघावी छात्र के नाते छात्रवृत्ति देकर 1913 में विदेश में उच्च शिक्षा के लिए भेज दिया । अमेरिका में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र, मानव विज्ञान, दर्शन और अर्थ नीति का गहन अध्ययन बाबा साहेब ने किया । वहां पर भारतीय समाज का अभिशाप और जन्म सूत्र से प्राप्त अस्पृश्यता की कालिख नहीं थी । इसलिए उन्होंने अमेरिका में एक नई दुनिया के दर्शन किए । अम्बेडकर ने अमेरिका में एक सेमिनार में "भारतीय जातीय विभाजन" पर अपना मशहूर शोध पत्र पढ़ा जिसमें उनके व्यक्तित्व की सर्वत्र प्रशंसा हुई ।

डॉ. अम्बेडकर को भारतीय संविधान की रचना हेतु संविधान सभा की प्रारूपण समिति का अध्यक्ष चुना गया । 26 नवम्बर, 1949 को डॉ. अम्बेडकर द्वारा रचित संविधान पारित किया गया।

डॉ. अम्बेडकर का लक्ष्य था – "सामाजिक असमानता दूर करके दलितों के मानव अधिकारों की प्रतिष्ठा करना । उन्होंने सावधान किया था कि 26 जनवरी, 1950 को हम परस्पर विरोधी जीवन में प्रवेश कर रहे हैं । हमारे राजनैतिक क्षेत्र में समानता रहेगी किन्तु सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में असमानता रहेगी । जल्द से जल्द हमें इस परस्पर विरोधिता को दूर करना होगा वर्ना जो असमानता के शिकार होंगे वे इस राजनैतिक गणतंत्र के ढांचे को उड़ा देंगे ।"

बाबा साहेब एक मनीषी योद्धा, नायक, विद्वान, दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाजसेवी एवं धैर्यवान व्यक्तित्व के धनी थे । उनकी अद्वितीय प्रतिभा अनुकरणीय है ।

जाति

भारतीय समाज जातीय ईकाइयों से गठित और विभक्त है । श्रमविभाजनगत आनुवंशिक समूह भारतीय ग्राम की कृषि केन्द्रित व्यवस्था रही है । यहां की सामाजिक व्यवस्था में श्रमविभाजन संबंधी विशेषीकरण जीवन के सभी अंगों में अनुस्यूत है और आर्थिक कार्यों का ताना-बाना इन्हीं आनुवंशिक समूहों से बनता है । यह जातीय समूह एक ओर तो अपने आंत्रिक संगठन से संचालित तथा नियमित है और दूसरी ओर उत्पादन सेवाओ के आदान-प्रदान और वस्तुओं के विनिमय द्वारा परस्पर संबद्ध हैं । समान परम्परागत के साथ, समान धार्मिक विश्वास, प्रतीक सामाजिक और धार्मिक प्रथाएं एवं व्यवहार, खान-पान के नियम, जातीय अनुशासन और सजातीय विवाह इन जातीय समूहों की आंत्रिक एकता को स्थिर तथा दृढ़ करते हैं । प्रत्येक मनुष्य की जाति तथा जातिगत धंधे देवी विधान से निर्दिष्ट हैं और व्यापक सृष्टि के अन्य नियमों की भांति प्रकृत तथा अटल हैं ।

एक गांव में स्थित परिवारों का एक समूह वास्तव में अपनी बड़ी जातीय ईकाई का अंग होता है जिसका संगठन तथा क्रियात्मक संबंधों की दृष्टि से एक सीमित क्षेत्र होता है जिसकी परिधि सामान्यत: 20-25 मील होती है । उस क्षेत्र में जाति विशेष की एक विशिष्ट आर्थिक तथा सामाजिक मर्यादा होती है जो उसके सदस्यों को जो जन्मना होते हैं, परम्परा से प्राप्त होती है । यह जातीय मर्यादा जीवन पर्यन्त बनी रहती है और जातीय धंधा छोड़कर दूसरा धंधा अपनाने से तथा आमदनी के उतार-चढ़ाव से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । कभी-कभी जब किसी जाति का एक अंग अपने परम्परागत पेशे के स्थान पर दूसरा पेशा अपना लेता है तो कालक्रम में वह एक पृथक जाति बन जाता है । हिंदू जातियो में गात्रीय विभाजन भी विद्यमान है । एक गोत्र के व्यक्ति एक ही पूर्वज के वंशज समझे जाते हैं ।

जाति शब्द संस्कृत की "जनी" (जन) धातु से बना है । जाति उसे कहते हैं जो नित्य है और अपनी तरह की समस्त वस्तुओं में समुवाय संबंध से विद्यमान है । व्याकरण शास्त्र के अनुसार जाति की परिभाषा है- अर्थात् जाति वह है जो आकृति के द्वारा पहचानी जाए । "जाति" शब्द का प्रयोग प्राचीन समय में विभिन्न मानव जातियों में नहीं होता था । वास्तव में जाति मनुष्यों के अन्तर्विवाहीय समूह या समूहों का योग है जिसका एक सामान्य नाम होता है जिसकी सदस्यता अर्जित न होकर जन्मना प्राप्त होती है जिसके सदस्य समान या मिलते-जुलते पैतृक धंधे करते हैं और जिसकी विभिन्न शाखाएं समाज के अन्य समूहों की अपेक्षा एक-दूसरे से अधिक निकटता का अनुभव करती हैं ।

जाति की परिभाषा से अलग अनेक विद्वानों ने उसकी विशेषताओं का उल्लेख करना उत्तम समझा है । जाति की कुछ विशेषताएं हैं अर्थात् जातीय समूहों द्वारा समाज का खंडों में विभाजन, जातीय समूहों के बीच ऊंच-नीच का प्राय: निश्चित तारतम्य, खान-पान और सामाजिक व्यवहार संबंधी प्रतिबंध, नागरिक जीवन तथा धर्म के विषय में विभिन्न समूहों की अनहर्ताएं तथा

विशेषाधिकार, पेशे के चुनाव में पूर्ण स्वतंत्रता का अभाव और विवाह अपनी जाति में करने का नियम ।

भारत उपमहाद्वीप में संसार की विभिन्न प्रजातियों का मिश्रण होता रहा है । और उच्च क्षेत्रों और जातीय समूहों में एक या दूसरी प्रजाति के लक्षण बहुलता से परिलक्षित हैं । तथापि, प्रजातीय भेद और जाति में अटूट संबंध स्थापित नहीं किया जाता ।

महात्मा बुद्ध जी : रैगर समाज

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है । इसके प्रस्थापक महात्मा बुद्ध शाक्यमुनि (गौतमबुद्ध) थे । वे छठवीं से पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक जीवित थे । उनके गुजरने के अगले पांच शताब्दियों में, बौद्ध धर्म पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैला और अगले दो हजार सालों में मध्य, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जम्बू महाद्वीप में भी फैल गया । आज बौद्ध धर्म में तीन मुख्य सम्प्रदाय हैं: शेरवाद, महायान और वज्रयान । बौद्ध धर्म को पैंतीस करोड़ से अधिक लोग मानते हैं और यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म है ।

"बुद्ध" वे कहलाते हैं, जिन्होंने सालों के ध्यान के बाद यथार्थता का सत्य भाव पहचाना हो । इस पहचान को बोधि नाम दिया गया है । जो भी "अज्ञानता की नींद" से जागते हैं, वे "बुद्ध" कहलाते हैं । कहा जाता है कि बुद्ध शाक्यमुनि केवल एक बुद्ध हैं- उनके पहले बहुत सारे थे और भविष्य में और होंगे । उनका कहना था कि कोई भी बुद्ध बन सकता है अगर वह उनके "धर्म" के अनुसार एक धार्मिक जीवन जीए और अपनी बुद्धि को शुद्ध करे । बौद्ध धर्म का अन्तिम लक्ष्य है इस दु:ख भरी स्थिति का अंत । "मैं केवल एक ही पदार्थ सिखाता हूं- दु:ख और दु:ख निरोध" (बुद्ध) । बौद्ध धर्म के अनुयायी आर्य अष्टांग मार्ग के अनुसार जीकर अज्ञानता और दु:ख से मुक्ति और निर्वाण पाने की कोशिश करते हैं ।

सिद्धांत

गौतमबुद्ध के गुजरने के बाद, बौद्ध धर्म के अलग5अलग संप्रदाय उपस्थित हो गये हैं, परंतु इन सबके कुछ सिद्धांत मिलते है ।

प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत कहता है कि कोई भी घटना केवल दूसरी घटनाओं के कारण ही एक जटिल कारण-परिणाम के जाल में विद्यमान होती है । प्राणियों के लिये, इसका अर्थ है कर्म और विपाक (कर्म के परिणाम) के अनुसार अनंत संसार का चक्र । क्योंकि सब कुछ अनित्य और अनात्मं (बिना आत्मा के) होता है, कुछ भी सच में विद्यमान नहीं है । हर घटना मूलत: शून्य होती है । परंतु मानव, जिनके पास ज्ञान की शक्ति है, तृष्णा को, जो दु:ख का कारण है, त्यागकर, तृष्णा में नष्ट की हुई शक्ति को ज्ञान और ध्यान में बदलकर, निर्वाण पा सकते हैं ।

चार आर्य सत्य

1. दु:ख : इस दुनिया में सब कुछ दु:ख है । जन्म में, बुढे होने में, बीमारी में, मौत में, प्रियतम से दूर होने में, नापसंद चीज़ों के साथ में, चाहत को न पाने में, सब में दु:ख है ।
2. दु:ख प्रारंभ : तृष्णा या चाहत, दु:ख का कारण है और फिर से सशरीर करके संसार को जारी रखती है ।
3. दु:ख निरोध : तृष्णा से मुक्ति पाई जा सकती है ।
4. दु:ख निरोध का मार्ग : तृष्णा से मुक्ति आर्य अष्टांग मार्ग के अनुसार जीने से पाई जा सकती है ।

बुद्ध का पहला धर्मोपदेश, जो उन्होंने अपने साथ के कुछ साधुओं को दिया था, इन चार आर्य सत्यों के बारे में था ।

आर्य अष्टांग मार्ग

बौद्ध धर्म के अनुसार, चौथे आर्य सत्य का आर्य अष्टांग मार्ग है दु:ख निरोध पाने का रास्ता । गौतमबुद्ध कहते थे कि चार आर्य सत्य की सत्यता का निश्चय करने के लिए इस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए-

1. सम्यक दृष्टि : चार आर्य सत्य में विश्वास करना ।
2. सम्यक संकल्प : मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना ।
3. सम्यक वाक : हानिकारक बातें और झूठ न बोलना ।
4. सम्यक कर्म : हानिकारक कर्मे न करना ।
5. सम्यक जीविका : कोई भी स्पष्टत: या अस्पष्टत: हानिकारक व्यापार न करना ।
6. सम्यक प्रयास : अपने आप सुधारने की कोशिश करना ।
7. सम्यक स्मृति : स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना ।
8. सम्यक समाधि : निर्वाण पाना और स्वयं का गायक होना ।

कुछ लोग आर्य अष्टांग मार्ग को पथ की तरह समझते हैं जिसमें आगे बढ़ने के लिए पिछले के स्तर को पाना आवश्यक है और लोगों को लगता है कि इस मार्ग के स्तर सब साथ-साथ पाए जाते हैं । मार्ग को तीन हिस्सों में वर्गीकृत किया जाता है: प्रज्ञा, शीला और समाधि ।

बोधि

गौतमबुद्ध से पाई गई ज्ञानता को बोधि कहलाते हैं । माना जाता है कि बोधि पाने के बाद ही संसार से छुटकारा पाया जा सकता है । सारी परमिताओं (पूर्णताओं) की निष्पत्ति चार आर्य सत्यों की पूरी समझ और कर्म के निरोध से ही बोधि पाई जा सकती है । इस समय लोभ, दोष, मोह, अविद्या, तृष्णा और आत्मा में विश्वास सब गायक हो जाते हैं । बोधि के तीन स्तर होते हैं: श्रावकबोधि, प्रत्येकबोधि और सम्यकसंबोधि । सम्यकसंबोधि बौद्ध धर्म की सबसे उन्नत आदर्श मानी जाती है ।

दर्शन

क्षणिकवाद: इस दुनिया में सब कुछ क्षणिक है और नश्वर है । कुछ भी स्थायी नहीं । परन्तु वेदिक मत से विरोध है ।

अनात्मवाद: आत्मा नाम की कोई स्थायी चीज नहीं । जिसे लोग आत्मा समझते हैं, वो चेतना का अविच्छिन्न प्रवाह है ।

अनीश्वरवाद: बुद्ध ईश्वर की सत्ता नहीं मानते क्योंकि दुनिया प्रतीत्यसमुत्पाद के नियम पर चलती है । पर अन्य जगह बुद्ध ने सर्वोच्च सत्य को अवर्णनीय कहा है । कुछ देवताओं की सत्ता मानी गयी है, पर वो ज्यादा शक्तिशाली नहीं हैं ।

शून्यतावाद: शून्यता महायान बौद्ध संप्रदाय का प्रधान दर्शन है ।

साम्प्रदाय: बौद्ध धर्म में दो मुख्य साम्प्रदाय हैं ।
थेरवाद– थेरवाद या हीनयान बुद्ध के मौलिक उपदेश ही मानता है ।
महायान: महायान बुद्ध की पूजा करता है । ये थेरावादियों को "हीनयान" (छोटी गाड़ी) कहते है ।

****

नफरत

जमाना अब बदलने लगा है,
चलन नफरतों का ही चलने लगा है,
हिकारत से सबको लगे हैं देखने,
भाई को अब भाई खलने लगा है,
जब से करने लगे हैं लोग तरक्की,
दिल अपनों का भी जलने लगा है,
जब से बहार आयी है गुलशन में,
बागबाँ का भी दिल मचलने लगा है,
जब से पता चल गया साजिशों का,
"अनजान" भी अब सम्भलने लगा है ।।

कन्हैया लाल "अनजान
निदेशक, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग,
नई दिल्ली–110003

मूल्यांकन

अपने बाग का मूल्यांकन,
फूलों और फलों से करो,
न कि टूटे पत्तों से ।

अपने दिन का मूल्यांकन,
सुनहरी सुबह से करो,
न कि काली रात से ।

अपनी राह का मूल्यांकन,
चमकते तारों से करो,
न कि काले बादलों से ।

अपने जीवन का मूल्यांकन,
अच्छे कामों से करो,
न कि बुरे अनुभवों से ।

अपने आप का मूल्यांकन,
अपनी सफलताओं से करो,
न कि असफलताओं से ।

(संजय कुमार)
सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

सफल मामले

श्री मानसिंह पुत्र श्री भरत सिंह, आसूचना ब्यूरो, तिनसुखिया, असम ने दिनांक 23-09-2014 को आयोग में एक अभ्यावेदन दिया जिसमें बताया गया कि उन्हें वर्ष 2010 में 2 वर्षों की अवधि के लिए तिनसुखिया, असम में तैनात किया गया था । इस समय उनकी तैनाती को 3 वर्ष 10 महीने हो गए हैं परन्तु असम में उनका कार्यकाल पूरा होने के बाद असम से दिल्ली मुख्यालय में उनके स्थानान्तरण पर विचार नहीं किया गया । जबकि इस बारे में आसूचना ब्यूरो में उच्चतर प्राधिकारियों से अनुरोध भी किया गया ।

आयोग ने इस मामले को आसूचना ब्यूरो के प्राधिकारियों के साथ उठाया और एक रिपोर्ट मांगी । इसके बाद आयोग के माननीय अध्यक्ष ने 05-01-2015 को सुनवाई संचालित की । सुनवाई के दौरान आई.बी. प्राधिकारियों ने सूचित किया कि आवेदक की गुवाहाटी से दिल्ली स्थानान्तरण करने से संबंधित शिकायत पर विचार किया गया और शिकायत का निवारण किया गया है । उन्हें आई.बी. हेडक्वार्टर, नई दिल्ली में तैनात किया गया है । आयोग के हस्तक्षेप से शिकायत कर्ता की शिकायत का निपटान किया गया और एक सफल मामला होते हुए माननीय अध्यक्ष द्वारा इसे 05-01-2015 को बंद कर दिया गया ।

सफल मामले

शिकायतकर्ता, श्री आर.एस. हरित जो दिल्ली विकास प्राधिकरण, नई दिल्ली में इलैक्ट्रिक डिवीजन में सहायक इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं, ने आयोग में दिनांक 30-12-2013 को अभ्यावेदन दिया जो एक्जीक्यूटिव इंजीनियर (ई) के पद पर पदोन्नति नहीं देने के बारे में है ।

आयोग ने इस मामले को डीडीए के संबंधित प्राधिकारी के साथ उठाया और एक रिपोर्ट मांगी । उसके बाद आयोग ने 10-11-2014 और 12-01-2015 को सुनवाई भी संचालित की। आयोग के हस्तक्षेप के बाद डीडीए प्राधिकारियों ने अपने 17-02-2015 के पत्र द्वारा सूचित किया कि शिकायतकर्ता की पदोन्नति पर विचार किया गया और ई.ओ. सं. 75 दिनांक 12-01-2015 के द्वारा सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से उन्हें सीडीसी आप ई.ई. (इलैक्ट.) के रूप में पदोन्नति दी गई है । तदनुसार, आयोग के हस्तक्षेप से शिकायतकर्ता की शिकायत का समाधान किया गया ।

महापुरुषों के अनमोल वचन

- जब तुम्हारे खुद के दरवाजे की सीढ़ियां गंदी हैं तो पड़ोसी की छत पर पड़ी गंदगी का उलाहना मत दीजिए ।

कनफ्यूशियस

- मनुष्य की इच्छाओं का पेट आज तक कोई नहीं भर सका ।

वेदव्यास

- इच्छा ही सब दु:खों का मूल है ।

बुद्ध

- माया मरी न मन मरा, मर-मर गया शरीर, आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर ।

कबीर

- दुनिया में सिर्फ दो सम्पूर्ण व्यक्ति हैं - एक मर चुका है, दूसरा अभी पैदा नहीं हुआ है । प्रसिद्धि व धन उस समुन्द्री जल के समान है जितना ज्यादा तक पीते हैं उतने ही प्यासे हो जाते हैं ।

सुकरात

- सत्य के मार्ग पर कोई दो ही गलतियां कर सकता है या तो वह पूरा सफर तय नहीं कर पाता या सफर की शुरुआत ही नहीं करता ।

गौतमबुद्ध

- व्यक्ति अकेले ही पैदा होता है और अकेले ही मर जाता है और वो अपने अच्छे और बुरे कर्मों का फल खुद ही भुगतता है और वह अकेले ही स्वर्ग या नर्क जाता है ।

चाणक्य

- किसी मूर्ख व्यक्ति के लिए किताबें उतनी ही उपयोगी हैं जितना कि एक अंधे व्यक्ति के लिए आईना ।

चाणक्य

- हर व्यक्ति जो मिल के सिद्धांत कि एक देश दूसरे देश पर शासन नहीं कर सकता को दोहराता है उसे यह भी स्वीकार करना चाहिए कि एक वर्ग दूसरे वर्ग पर शासन नहीं कर सकता ।

बी.आर. अम्बेडकर

- आज भारतीय दो अलग-अलग विचारधाराओं द्वारा शासित हो रहे हैं, उनके राजनैतिक आदर्श जो संविधान के प्रस्तावना में इंगित हैं वो स्वतंत्रता, समानता और भाई-चारे को स्थापित करते हैं और उनके धर्म में समाहित सामाजिक आदर्श इससे इन्कार करते हैं ।

बी.आर. अम्बेडकर

- उसकी चमक से सब कुछ प्रकाशमान है ।

गुरुनानक

- दुनिया में किसी भी व्यक्ति को भ्रम में नहीं रहना चाहिए, बिना गुरु के कोई भी दूसरे किनारे तक नहीं जा सकता ।

गुरुनानक